

## महिला सशक्तिकरण में हिंदी साहित्य का योगदान

ऐश्वर्या हणमंत कांबळे शोधछात्र शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर ईमेल – aishwaryashah235@gmail.com

### शोध सार:

महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य महिलाओं को समाज में समान अधिकार, स्वतंत्रता, और अवसर प्रदान करना है, जो समाज की समग्र प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक है। हिंदी साहित्य ने महिला के अधिकारों, उनके सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति को उजागर करते हुए महिला सशक्तिकरण को प्रमुखता से प्रस्तुत किया है। प्रारंभिक साहित्य में जहाँ महिलाओं को त्याग और समर्पण के प्रतीक के रूप में दिखाया गया था, वहीं समय के साथ साहित्य ने महिलाओं के स्वतंत्रता, शिक्षा, और अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य किया। 19वीं और 20वीं सदी में महिला लेखिकाओं ने इस मुद्दे को साहित्य में प्रमुखता से उठाया, जैसे महादेवी वर्मा, कृष्णा सोबती, और इस्मत चुगताई ने। आदिकाल में महिलाओं का चित्रण धार्मिक और आदर्श दृष्टिकोण से हुआ, जबकि भक्तिकाल में संतों ने महिलाओं के समानता की बात की। रीतिकाव्य में महिलाओं को मुख्यतः सौंदर्य और प्रेमिका के रूप में चित्रित किया गया, लेकिन महिलाओं की स्वतंत्रता और स्वायत्तता की अवधारणा स्पष्ट नहीं थी। आधुनिक हिंदी साहित्य में महिला सशक्तिकरण को व्यापक रूप से चित्रित किया गया, जहाँ कवियों और लेखकों ने महिलाओं के अधिकारों, उनकी स्वतंत्रता और समानता की बात की। खासकर कहानी और उपन्यासों में महिला पात्रों की स्वायत्तता और उनके संघर्ष को प्रमुखता से दिखाया गया।

हिंदी साहित्य ने महिला सशक्तिकरण में अहम भूमिका निभाई है। यह साहित्य न केवल महिलाओं के अधिकारों को उजागर करता है, बल्कि समाज में उनके स्थान और भूमिका को पुनः परिभाषित करने का कार्य भी करता है। महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में साहित्य ने समाज में बदलाव की आवश्यकता को रेखांकित किया और महिलाओं को आत्मनिर्भरता, समानता और स्वतंत्रता की ओर प्रेरित किया।

**बीज शब्द:** महिला सशक्तिकरण, हिंदी साहित्य, अधिकार, स्वतंत्रता, सामाजिक स्थिति, संघर्ष, समानता, महिला लेखिका, साहित्यिक योगदान

### भूमिका:

महिला सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण सामाजिक आंदोलन है, जिसका उद्देश्य महिलाओं को समाज में समान अधिकार, स्वतंत्रता, और अवसर प्रदान करना है। यह केवल महिलाओं के लिए नहीं, बल्कि समाज की समग्र प्रगति के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। हिंदी साहित्य ने हमेशा महिला के अधिकारों और उनकी सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक स्थितियों को उजागर करने का कार्य किया है। प्रारंभिक साहित्य में जहाँ महिला पात्रों को अक्सर त्याग, समर्पण और दुखों के प्रतीक के रूप में दिखाया गया, वहीं समय के साथ साहित्य ने महिलाओं के स्वतंत्रता, शिक्षा, और उनके अधिकारों के प्रति एक जागरूकता फैलाने का कार्य किया। साहित्य स्त्री जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। साहित्य स्त्री विमर्श की शुरुवात हुई, स्त्री विमर्श को समझने के लिए पहले विमर्श को समझना होगा। विमर्श शब्द का अर्थ हिंदी शब्दकोश में विमर्श का अर्थ – “विचार, विवेचन, परीक्षण, समीक्षा, तर्क”<sup>1</sup> वर्तमान संदर्भ में रोहिणी अग्रवाल विमर्श को “जीवंत बहस”<sup>2</sup> मानती हैं। स्त्री विमर्श से तात्पर्य है स्त्री विमर्श एक विचारधारा एक माध्यम है। जिसमें स्त्री के हितों पर विचार कर अपनी बात को रखा जाता है। रोहिणी अग्रवाल के शब्दों में “स्त्री को केंद्र में रखकर समाज संस्कृति, परंपरा एवं इतिहास का पुनरीक्षण करते हुए स्त्री की स्थिति पर मानवीय दृष्टि से विचार करने की अनवरत प्रक्रिया”<sup>3</sup>

19वीं और 20वीं सदी में महिला लेखकों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से महिला सशक्तिकरण के मुद्दे को प्रमुखता से उठाया। महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत, और प्रतिज्ञा कुमारी जैसी लेखिकाओं ने महिलाओं के उत्थान के लिए साहित्य में आवाज उठाई। तुलसीदास की रामचरितमानस में सीता के रूप में और जयशंकर प्रसाद की रचनाओं में महिलाओं की मानसिकता और स्वाधीनता की बात की गई। आधुनिक साहित्य में भी, जैसे महाश्वेता देवी, कृष्णा सोबती और शोभा डे ने महिला सशक्तिकरण के विचार को प्रकट किया है और महिलाओं के संघर्षों को साहित्य में प्रमुख स्थान दिया है। इक्कीसवीं सदी में, महिला सशक्तिकरण का मुद्दा और भी महत्वपूर्ण हो गया है और हिंदी साहित्य ने इसे नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। आज महिला सशक्तिकरण केवल एक सामाजिक आंदोलन नहीं है, बल्कि यह जीवन के विभिन्न पहलुओं में महिलाओं की स्वतंत्रता, अधिकार और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने की एक समग्र प्रक्रिया बन चुका है। इस प्रकार, हिंदी साहित्य ने महिला सशक्तिकरण को समाज में फैलाने, महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करने, और उनके संघर्षों को प्रमुखता से दर्शाने में अहम भूमिका निभाई है।

### आदिकालीन हिंदी साहित्य और महिला सशक्तिकरण :

आदिकालीन हिंदी साहित्य और महिला सशक्तिकरण के बीच गहरा संबंध है, लेकिन इसे लेकर कुछ सीमित दृष्टिकोण रहे हैं। आदिकालीन हिंदी साहित्य में महिलाएं मुख्य रूप से एक आदर्श, धार्मिक या सामाजिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत की जाती थीं, और उन्हें घर की परिधि तक ही सीमित रखा गया था। इस काल में प्रमुख साहित्यिक कृतियों में भक्ति साहित्य, वीरगाथाएं, और धार्मिक ग्रंथ शामिल थे, जहां महिलाओं का चित्रण प्रायः पुरुषों की सहायक या आदर्श पत्नी के रूप में हुआ था। अक्का महादेवी और अंडाल जैसी भक्ति कवयित्रियाँ भी स्त्री अस्मिता के स्वर को अभिव्यक्त करती हैं। बारीकी से देखा जाए तो अंडाल का मानना था की “स्त्री केवल पुरुषों के वासनपूर्ति का साधन नहीं हैं।”<sup>4</sup>

भक्तिकालीन हिंदी साहित्य और महिला सशक्तिकरण:

भक्तिकाल का हिंदी साहित्य महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण बदलावों का संकेत देता है। इस काल में समाज में महिलाओं की स्थिति पर विचार किया गया और कुछ कवियों और संतों ने महिलाओं के अधिकारों और उनके समानता की बात की। हालांकि, इस काल में महिला सशक्तिकरण का मुख्य रूप से धार्मिक और आध्यात्मिक रूप था, लेकिन इसके प्रभाव को महिलाओं के सामाजिक और मानसिक स्वतंत्रता के रूप में देखा जा सकता है।

### भक्तिकाल और महिला सशक्तिकरण के कुछ प्रमुख पहलू:

1. भक्ति आंदोलन और समानता का संदेश: भक्तिकाव्य ने समाज में जटिल धार्मिक और जातिवाद से परे प्रेम और भक्ति के आदर्श को प्रस्तुत किया। संत कवियों ने यह संदेश दिया कि ईश्वर के समक्ष जाति, लिंग, या सामाजिक स्थिति कोई मायने नहीं रखती। इस विचारधारा ने महिलाओं को एक प्रकार की आध्यात्मिक समानता का अनुभव कराया। मीरा बाई, ललना, और अन्य महिला संतों ने भक्ति के मार्ग पर चलते हुए समाज की परंपराओं और रुढ़ियों को चुनौती दी।
2. मीरा बाई का योगदान: मीरा बाई का नाम भक्तिकाव्य और महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में प्रमुख रूप से लिया जाता है। उन्होंने न केवल कृष्ण भक्ति को अपने जीवन का आधार बनाया, बल्कि पुरुष प्रधान समाज की परवाह किए बिना अपने अधिकारों के लिए संघर्ष किया। मीरा बाई की कविताएँ और भजन महिलाओं के आत्मविश्वास और स्वतंत्रता का प्रतीक हैं। उनकी भक्ति में किसी भी प्रकार का पितृसत्ता से भय नहीं था, बल्कि उन्होंने उसे चुनौती दी।
3. कबीर और समाज सुधार: कबीर, जिन्होंने भक्ति और सूफीवाद के विचारों को मिलाकर समाज में समानता का संदेश दिया, महिलाओं के अधिकारों की भी वकालत करते थे। उनका कहना था कि सच्ची भक्ति किसी विशेष धर्म या जाति की नहीं, बल्कि व्यक्ति के आत्मा और ईश्वर के बीच का रिश्ता है। उन्होंने कई दोहों में पुरुष और महिला में कोई भेदभाव नहीं किया।

### रीतिकालीन हिंदी साहित्य में महिला सशक्तिकरण:

रीतिकालीन हिंदी साहित्य (1700-1900) में महिला सशक्तिकरण की अवधारणा बहुत स्पष्ट और सक्रिय रूप से नहीं दिखती, क्योंकि इस काल में समाज में पुरुषप्रधान दृष्टिकोण और पितृसत्ता का बोलबाला था। रीतिकाव्य का मुख्य उद्देश्य प्रेम, श्रृंगार, और शास्त्रीय आदर्शों को प्रस्तुत करना था, जिससे महिलाओं को मुख्य रूप से सुंदरता, प्रेमिका, पतिव्रता या आदर्श स्त्री के रूप में चित्रित किया गया।

### रीतिकाल और महिला सशक्तिकरण के कुछ पहलू:

1. महिला पात्रों का चित्रण: रीतिकाव्य में महिला पात्रों को प्रेमिका, पतिव्रता, और आदर्श स्त्री के रूप में प्रस्तुत किया गया। काव्य में महिलाओं की शारीरिक सुंदरता, सौम्यता, और प्रेममय स्वभाव को अधिक महत्व दिया गया। रीतिकाव्य में महिलाओं के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दिखाने की बजाय, उनका चित्रण मुख्य रूप से बाहरी रूप और सौंदर्य पर आधारित था।
2. श्रृंगारी साहित्य का प्रभाव: रीतिकाव्य के अधिकांश काव्य शास्त्र और साहित्य श्रृंगार रस पर आधारित थे, जिसमें पुरुष और महिला के रिश्ते को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया गया। इस साहित्य में महिलाओं को उनके बाहरी रूप और आकर्षण के आधार पर महत्व दिया गया, जिससे उनके मानसिक और आत्मनिर्भरता की ओर कम ध्यान दिया गया। महिलाओं का चित्रण मुख्यतः पुरुषों के आकर्षण का केन्द्र और प्रेमिका के रूप में किया गया।
3. सामाजिक स्थिति और पुरुष प्रधानता: रीतिकाव्य में महिलाओं की स्थिति को सामाजिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक परंपराओं के तहत सीमित किया गया था। पितृसत्ता और पुरुष प्रधान समाज के प्रभाव के कारण, महिलाओं की भूमिका अधिकतर पारंपरिक और घरेलू सीमाओं में बांध दी गई थी। समाज में उनका स्थान कम ही बदलाव या सशक्तिकरण की ओर

बढ़ा था। महिला पात्रों के बारे में जो कवि या रचनाकार लिखते थे, वे अधिकतर पुरुष थे, जो अपनी दृष्टि से महिलाओं की भूमिका का चित्रण करते थे।

#### आधुनिककालीन हिंदी साहित्य और महिला सशक्तिकरण:

आधुनिककालीन हिंदी साहित्य और महिला सशक्तिकरण का गहरा संबंध है, क्योंकि इस काल में महिलाओं की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थिति पर विशेष ध्यान दिया गया है। यह समय महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाने और उनकी भूमिका को पहचानने का रहा है। महिला सशक्तिकरण का प्रमुख उद्देश्य महिलाओं को अपने जीवन के फैसले लेने की स्वतंत्रता प्रदान करना, समान अवसर देना और समाज में उनकी भूमिका को मान्यता देना है। हिंदी साहित्य ने इस उद्देश्य को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

#### महिला सशक्तिकरण और आधुनिक हिंदी साहित्य

आधुनिक हिंदी काव्य में महिला सशक्तिकरण के विचारों को प्रमुखता से स्थान मिला है। इस साहित्यिक आंदोलन ने महिलाओं के अधिकारों, उनकी भूमिका, और उनके संघर्षों को समाज के सामने रखा। कविता ने न केवल महिलाओं को अपनी स्थिति पर विचार करने के लिए प्रेरित किया, बल्कि उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक भी किया। महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में हिंदी काव्य ने समाज में एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया और महिलाओं को आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

आधुनिक हिंदी काव्य में नारीवाद का प्रभाव बढ़ता गया, जहां कवियों ने महिलाओं के अधिकारों, उनकी स्वतंत्रता और समानता की बात की। सुमित्रानंदन पंत और निराला जैसे कवियों ने महिलाओं के जीवन के महत्व को स्वीकार किया और उन्हें जीवन की संपूर्णता का हिस्सा माना। इस तरह से काव्य में नारीवाद का एक नया रूप उभरकर सामने आया, जिसने महिलाओं की शक्ति और सशक्तिकरण पर बल दिया।

आधुनिक हिंदी कविता में महिलाओं के संघर्ष और उनके संघर्षशील व्यक्तित्व का चित्रण हुआ। कवियों ने पारंपरिक धारणाओं को चुनौती दी और महिलाओं को समाज में एक स्वतंत्र और सशक्त व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया। निराला की कविता "छायावादी कविता" में नारी के संघर्ष और उसकी स्वतंत्रता की चाह को प्रमुखता से दर्शाया गया है।

आधुनिक हिंदी काव्य में महिलाओं की स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता, और उनके अधिकारों पर विशेष ध्यान दिया गया। कवि और कवयित्रियाँ नारी को उसके अधिकारों का अहसास दिलाने के लिए लिखते थे, ताकि समाज में समानता और न्याय की भावना जाग्रत हो। महादेवी वर्मा ने नारी के आत्मसम्मान, शिक्षा और स्वतंत्रता पर बल दिया। उनकी कविताएं महिला मनोवज्ञान और उनके संघर्ष की गहरी समाज को दर्शाती हैं।

“मैं नीर भारी दुख की गगरी  
विस्तृत नभ का कोई कोना  
मेरा न कभी अपना होता  
परिचय इतना इतिहास यही।”<sup>5</sup>

आधुनिक हिंदी कविता में न केवल महिलाओं की सामाजिक स्थिति की आलोचना की गई, बल्कि उनके लिए बेहतर समाज की आवश्यकता को भी रेखांकित किया गया। महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में काव्य लेखकों ने समाज में महिलाओं के स्थान और भूमिका पर सवाल उठाए। उनकी कविताओं ने नारी की आंतरिक शक्ति, संघर्ष और आत्मनिर्भरता को मुख्य रूप से प्रस्तुत किया।

#### कहानी और उपन्यासों में महिला सशक्तिकरण:

कहानी और उपन्यासों में महिला सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसे आधुनिक हिंदी साहित्य में विस्तार से उठाया गया है। हिंदी कहानी और उपन्यासों ने महिलाओं के संघर्ष, अधिकार, और स्वतंत्रता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। साहित्य के इस रूप ने न केवल महिलाओं की स्थिति पर गहरी सोच प्रस्तुत की, बल्कि समाज में उनके स्थान को चुनौती दी और उनका सशक्तिकरण किया।

#### • महिला पात्रों का नया चित्रण:

पारंपरिक हिंदी साहित्य में महिलाओं को अक्सर घर की चार दीवारी तक सीमित दिखाया जाता था, लेकिन आधुनिक हिंदी कहानी और उपन्यासों में महिला पात्रों को स्वतंत्र, साहसी और संघर्षशील रूप में प्रस्तुत किया गया। प्रेमचंद की कहानियों में जैसे "नवजीवन" और "दो बैलों की कहानी" में महिलाओं के आत्मसम्मान और संघर्ष को दिखाया गया है। उन्होंने दिखाया कि महिलाएँ भी समाज की धारा में बदलाव ला सकती हैं और उन्हें अपनी आवाज उठाने का अधिकार है।

- कहानी और उपन्यासों में नारीवाद

20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, नारीवादी विचारधारा ने साहित्य को प्रभावित किया, और कहानी और उपन्यासों में महिला सशक्तिकरण की अवधारणा को मजबूत किया। इस्मत चुगताई की कहानी "लिहाफ" और शिवानी के उपन्यासों में महिलाओं के शारीरिक और मानसिक संघर्ष को विस्तार से व्यक्त किया गया। इन रचनाओं में नारी के अधिकारों, स्वतंत्रता, और मानसिक संघर्ष की गहरी पड़ताल की गई है।

- आधुनिक हिंदी उपन्यासों में महिला पात्रों की स्वायत्तता:

आधुनिक हिंदी उपन्यासों में महिला पात्रों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक और समाज के पारंपरिक बंधनों से बाहर निकलते हुए दिखाया गया है। रजनी गुप्त का उपन्यास 'कितने कठघरे' और कुसुम अरोड़ा का 'वह चुप थी' महिलाओं की सामाजिक स्थिति और उनके आत्मनिर्भर होने की चाह को उजागर करते हैं। इन उपन्यासों में महिलाओं की स्वायत्तता, उनके व्यक्तिगत निर्णयों की स्वतंत्रता और उनके अधिकारों की मांग को प्रमुखता से चित्रित किया गया है।

- समाज में महिलाओं की भूमिका की पुनर्व्याख्या:

कई उपन्यासों ने समाज में महिलाओं की भूमिका को पुनर्व्याख्यायित किया और उनके पारंपरिक स्थान को चुनौती दी। रानीतेरी जैसे उपन्यासों में महिला पात्रों को ना सिर्फ पारिवारिक दायित्व निभाते हुए दिखाया गया है, बल्कि उनका व्यक्तित्व भी एक समाजिक नेता, कर्मचारी और संघर्षशील इंसान के रूप में सामने आता है। इन कृतियों में महिलाओं को समाज के बदलाव का मुख्य हिस्सा माना गया है।

- कहानियों और उपन्यासों में महिलाओं का पारंपरिक बंधनों से मुक्त होना:

आधुनिक हिंदी उपन्यासों और कहानियों में महिला पात्रों को पारंपरिक सामाजिक बंधनों से बाहर निकलते हुए और अपनी पहचान स्थापित करते हुए दिखाया गया है। शिवानी और मनोहर रानी ने उपन्यासों में ऐसे महिला पात्रों की रचनाएँ की हैं, जो पारंपरिक और सख्त समाजिक ढाँचे से परे जाकर अपनी जिंदगी को अपने हिसाब से जीती हैं। महिलाओं की स्वतंत्रता और निर्णय लेने की क्षमता को उपन्यासों में प्रमुखता से स्थान दिया गया है।

- महिला सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन:

महिला सशक्तिकरण को लेकर साहित्यकारों ने समाज में बदलाव की आवश्यकता को भी रेखांकित किया है। उपन्यासों और कहानियों ने यह दिखाया कि समाज में महिलाओं की स्थिति तभी बेहतर हो सकती है जब वे शिक्षा, स्वतंत्रता और बराबरी के अधिकार प्राप्त करें। विक्रम सेठ के "आत्मकथा" जैसे उपन्यास में न केवल व्यक्तिगत जीवन की गहराई से परख की जाती है, बल्कि समाज में महिलाओं के लिए आवश्यक परिवर्तन की आवश्यकता को भी उजागर किया गया है।

महिला सशक्तिकरण के प्रमुख तत्व

- शिक्षा का महत्व:

महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में शिक्षा को सबसे बड़ा साधन माना गया है। कई साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में महिलाओं के शिक्षा के अधिकार और उसके महत्व को प्रमुखता से उठाया। यह माना गया कि शिक्षा से ही महिला को आत्मनिर्भरता और समानता प्राप्त हो सकती है।

- समानता का अधिकार:

साहित्य में महिलाओं के समान अधिकारों की बात भी प्रमुखता से उठाई गई है। खासकर श्रम, संपत्ति और राजनीतिक अधिकारों में समानता की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

- स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता:

साहित्य में महिलाओं को अपनी पहचान बनाने, आत्मनिर्भर होने और अपनी स्वतंत्रता का सम्मान प्राप्त करने के बारे में भी गहरी चर्चा की गई है। यह महिलाओं को समाज में अपनी शक्ति पहचानने और अपनी इच्छा के अनुसार जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है।

- परिवार और समाज में भूमिका:

परिवार और समाज में महिलाओं की भूमिका और उनके निर्णय लेने की स्वतंत्रता पर साहित्यकारों ने गहरी सोच प्रस्तुत की है। पारंपरिक धारणाओं को चुनौती देकर महिलाओं को समान अधिकारों की मांग की गई है।

**निष्कर्ष:**

महिला सशक्तिकरण में हिंदी साहित्य का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली रहा है। हिंदी साहित्य ने न केवल महिलाओं के अधिकारों और सामाजिक स्थिति पर विचार किया, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भरता, स्वतंत्रता, और समानता

की दिशा में प्रेरित भी किया। विभिन्न कालखंडों में साहित्यकारों ने महिला पात्रों को मजबूत, साहसी, और सामाजिक बदलाव के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। हिंदी साहित्य में प्रसिद्ध कवि और लेखिका जैसे रजनी गुप्त, मन्नू भंडारी, महादेवी वर्मा और इस्मत चुगताई ने अपनी रचनाओं के माध्यम से महिलाओं की समस्याओं को उजागर किया और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए आवाज़ उठाई। महादेवी वर्मा की कविताओं और कहानी संग्रहों में नारी का चित्रण न केवल संवेदनशीलता से किया गया, बल्कि उनके आत्म-सम्मान और स्वतंत्रता की ओर रुझान भी स्पष्ट था।

हिंदी साहित्य ने महिला सशक्तिकरण के आंदोलन को प्रोत्साहित करने, महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाने, और उन्हें समाज में समान दर्जा दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह साहित्य आज भी महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक प्रेरणास्रोत के रूप में कार्य कर रहा है।

**संदर्भ ग्रंथ:**

1. डॉ. बाहरी हरदेव, हिंदी शब्दकोश, राज्यपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 2015 पृष्ठ क्र. 7511
2. अग्रवाल रोहिणी, साहित्य की जमीन और स्त्री मन के उच्छ्वास, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2014, पृष्ठ क्र. 111
3. अग्रवाल रोहिणी, साहित्य की जमीन और स्त्री मन के उच्छ्वास, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2014, पृष्ठ क्र. 111
4. डॉ. के. एम. मालती, नारी विमर्श भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, पृष्ठ क्र.15
5. वर्मा महादेवी, श्रृंखला की कड़ियाँ, राधाकृष्ण प्रकाशन इलाहाबाद, पृष्ठ क्र. 68